COMPILED

वैदिक जपजी

लेखक

श्री स्वामी शान्ता नन्द जी
(सन्त मंगल देव)

—प्रकाशक—

पं० गुरु प्रसाद: वैद्य कविराज
प्रेम औषधालय जेहलम
विक्रमी सम्वत १९९०
२७ नवम्बर

मिलने का पता
पं० गुरु प्रसाद: वैद्य
प्रेम औषधालय जेहलम
मूल्य —)

रामौद प्रेस शाहालमी दरवाजा लाहौर
में छपी।

ओ३म

। भूमिका ।

प्यारे पाठको ॥ यह छोटी सी वैदिक जपजी ,, नामक पुस्तक साधारण भाषा गुरुमुखी में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ गुरुमुखी तथा हिन्दी पढ़े लिखे भक्त तथा भक्तनियों में प्रभु भक्ती सधारणार्थ कुछ वर्ष पूर्व कई भक्तों के आग्रह करने पर प्रकाशित की गई थी ॥ अब कई एक प्रभु भक्तों ने पुनः इस को प्रकाशित करवाने की इच्छा प्रगट की है कि इसे हिन्दी तथा गुरुमुखी दोनों भाषाओं में पुनः प्रकाशित किया जावे ॥ इससे साधारण लोगों को अधिक लाभ की संभावना हो सकती है। इस कारण इस को छपवाने के लिये मैं श्री मान् कविराज

० गुरुप्रसाद वैद्य जेहुल की सेवा में समर्पित करता हूं। वे इस पुण्य के भागी बनें। ताकि इन विचारों से साधारण जनता को लाभ प्राप्त हो सके।

इति

शान्तानन्द

प्रभु प्रेम

मन प्रेम नगर में चल बसिए ।
यहां रहता प्रीतम प्यारा है ॥
ना वहां दीवा ना वहां बाती ।
एक समान सदा दिन राती ॥
कोट भानु उजियारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ १

ना वहां कंगला शाह नहीं कोई ।
प्रेम दृष्टि सम सब में होई ॥
सबे सज्जन इक सारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ २

ऊंच नीच वहां वर्ण न पावें ।
ना वहां भाव घृणा के आवें ॥
प्रेम ही प्रेम पसारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ ३

ना वहां भूख प्यास नहीं वांचे ।
ज्ञान अमी रस पाइये तांचे ॥
बरसत अमृत धारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ ४

ना जागृत और स्वप्न सुषुप्ति ।
योगी जाने कोई विरला युक्ति ।
तुरिया अनहद झनकारा है ॥
यहां रहता प्रीतम ॥ ५

जन्म मरण का बन्ध ना व्यापै ।
काल नेमी का दण्ड ना व्यापै ।
मुक्ति पद मंगल द्वारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ ६

ओ३म

वैदिक जपजी ॥

। नाम की महिमा ।

दोहा

वैदिक जपजी में कही, निरमल महिमा नाम ।
हे भक्तो ! श्रद्धा सहित, भजो सदा निष्काम ॥

। वैदिक जपजी का अर्थ ।

॥ कवित्त ॥

वैदिक मे वेद कहा, जप से है नाम जाप ।
जी से इस जीव को सम्बोधन कराया है ॥
तात्पर्य्य अरे जीव जीवन उधार हित वही जाप
जप जो कि वेद ने बताया है ॥
यही इक सार, करे भव सिंधु पार ।
बिना जाके संसार, वह असार कहलाया है ॥

वही जप जपजी में तत्व नाम ओं कहा ।
मङ्गल यह पहली भेंट आप को चढ़ाया है ॥

चतुष्पदी

एक ओं ही है सत्य नाम, जांका कीया सकल जहान,
एक ओं से उपजे वेद, सो ही कहें ओं का भेद ॥
सत्य, चित, आनन्द, है सोई,
घट घट व्यापक है प्रभु जोई ।
जो दीखे सब उसकी माया,
सकल विश्व उस माहिं समाया ॥
अन्दर बाहिर नेड़े दूर,
सब थावीं सो है भरपूर ।
जन्म मरण से सदा न्यारा,
काम क्रोध से किया किनारा ॥
नस नाड़ी बन्धन नहीं जांके,
ब्रह्मादिक गुण गावहिं ताके ।
अचल अडोल नित्य रस एक,
जाने जांके हृदय विवेक ॥

निर्भय निर्विकार कर्तार,
        जाकि महिमा अपरंपार।
ऐसा ईश वेद बतलावें,
        मङ्गल जो जाने सुख पावें॥

द्विपदी

गति दाता इस विश्व का एक यों ही जान।
भव परलय वश जा सके प्राणन का भी प्राण॥

चतुष्पदी

उस बिन शब्द सुने नहीं कान,
        रसना रस कर सके न पान।
उस बिन नेत्र लखें न रूप,
        वो है सब इन्द्रियन का भूप॥
उस बिन नाक न लेवे गन्ध,
        उस बिन बिगडे सभी आनन्द।
उस बिन हाथ करें नहीं कार,
        उस बिन पग नहीं करें विहार॥

उस बिन त्वचा स्पर्श त्यागे ।
उस बिन देह छोड जी भागे ।
उस बिन एक स्वास नहीं आवे .
उस बिन मृतक शरीर कहावे ॥
वो है प्राणन का भी प्राण
इस विधि वेद करें व्याख्यान
उस विन पलक न हिलनी पावे ।
उस विन वृक्ष पात नहीं लावे ॥
ऐसा ईश वेद बतलावें ।
मंगल जो जाने सुख पावें ॥

द्विपदी

कर्त्ता धर्त्ता विश्व का हरता वही महेश ।
ओं के ध्यान और जाप से नाशहि सकल क्लेश

चतुष्पदी

उस विन भानु तजे प्रकाश ।
उस विन चन्दा होए उदास ॥

उस बिन बीज न अङ्कुर लावे।
उस बिन वृक्ष फूल नहीं आवे॥
उस बिन फूल नहीं फल देवें।
उस बिन जीव नहीं सुख लेवें॥
उस बिन मेघ न देवें नीर.
उस बिन बंद होवे समीर॥
उस बिन बल नहीं धारें वीर।
उस बिन छोड़ दें सब धीर।
उस बिन सूखें नदियां नाले।
उस बिन उजड़े गिरि हरियाले॥
उस बिन धरणी सहे न भार।
उस बिन सारा विश्व असार।
उस बिन जीव न मुक्ति पावें।
बार बार जनमें मर जावें॥
उस बिन जग जीवन है कूर।
उस बिन मानुषजन्म अधूर॥
ऐसा ईश वेद बतलावें।
मंगल जो जाने सुख पावें॥

द्विपदी

करुणा सिन्धु भगवान का।

कर सिमरन हर स्वास ।
जो भक्तों का आश्रा ,
सब जग जास निवास ॥

चतुष्पदी

उस बिन नहीं दिवस और रैन ।
उस बिन नहीं जाग्रत और शयन ॥
उस बिन सूने भवन तमाम ,
उस बिन होसो आवन जान ,,
उस बिन तेरा कौन सहाई ,
उस ही का चिन्तन सुखदाई ,,
उस बिन दामनी दमकत नाहीं ,
उस बिन मोती ढलकत नाहीं ,,
उस बिन सिन्धु बिन्दु हो सूखे ,
उस बिन जीव मरें सब भूखे ,,
उस बिन कौन प्राण का दाता ,
उस बिन कौन सखा पितु माता ,,
उस बिन कोई न साचा मीत ,
उस बिन किस संग करे प्रीत ,,

उस बिन कष्ट ग्रसें तोहे भारे ,
        उस बिन आवें यम के द्वारे ,,
उस का किसे न पाया अन्त ,
        कह कह गये अनन्त अनन्त ,
ऐसा ईश वेद बतलावैं ,,
        मंगल जो जाने सुख पावैं ,,

द्विपदी

प्रभु रचना बहु विधि रचि, कैसे करूं व्याख्यान
इस लीला को सो लखे , करे जो उस का ध्यान

चतुष्पदी

उस ने भूमि अनन्त बनाई ।
        उस ने अद्भुत खेल रचाई ।
उसने नाना भांति सजाई,
        उस ने बहु बहु भांति बसाई ॥
उसने रच दिए नदियां नाले,
        जो उत्तम निर्मल जल वाले ॥
उस ने अनेक गिरि रच दीने ।

बहु बहु भांति सुशोभित कीने ॥
उस ने बूटे बेल उगाये ।
उस ने नाना फूल सजाये ॥
उस ने दिये मेवे बहु भांति ,
उस की रचि लखे को जांति ॥
उस ने रचे समुद्र भारे ।
जिन का कोई न पावे पारे ॥
उस ने स्वर्ग नरक दोऊ कीने ,
उस ने कर्मन के फल दीने ॥
उस ने मुक्ति राह बतलाया ,
उस ने वेद ज्ञान सुनाया ॥
ऐसा ईश वेद बतलावें ,
मंगल जो जाने सुख पावें ॥

द्विपदी

केहीं कारण बेएक हैं, उत्तम हैं केहीं काज ॥
यह वर्णन आगे करूं , ज्यों सब के महाराज ॥

लावणी

ख स्वरूप में थी जब सृष्टि :

न कोई उस में विकार ही था ।
न थी चन्द्र सूर्य्य की रचना ।
जब सारे अन्धकार ही था ॥
न पहाड़ और नदियां नाले ।
न पृथ्वी विस्तार ही था ॥
सत्य; चित, आनन्द, निरञ्जन,
निर्मल एक ओंकार ही था ॥

चतुष्पदी

उस बिन दूजा और न पाया ।
इस कारण वह एक कहाया ।
गायत्री गुरु मन्त्र सार,
उस के आदि एक ओंकार ।
वेद मन्त्रों के आदि अन्त,
ओ३म् उच्चार हिं साधु सन्त ।
ओं नाम ब्रह्मा जप कीना,
आनन्द मुक्ति का पद लीना ।
ओं नाम जपयो श्री राम,
सफल भये ता के सब काम ।

ओं नाम जप कृष्ण बताया,
    जिस का गीता में यश गाया ॥
ओं नाम की ध्रुव लिवलाई,
    भये भक्त के आन सहाई ॥
ओं नाम जप वेद बतावें,
    मंगल मनन करें सुख पावें ॥

द्विपदी

एक ओं के जाप से, सिद्ध होंय अयलोक ।
आत्मज्ञान प्रकाश से, मिट जावें सब शोक ॥

। चतुष्पदी ।

ओं नाम जप सिद्ध कहाये, (कहावे)
    तां के काल निकट नहीं आवे ॥
सुख पूर्वक तजदें शरीर,
    तां को कोऊ न होवत पीर ॥

ओं नाम जप गगन हीं गमना।
ओं नाम जप हो वल पवना।
ओं नाम जप मुक्त कहावें।
जन्म मरण बन्धन नहीं पावें।
अनेक जन्म को जाने बात।
हरि सम्पत्ति उन के हाथ।
सब शत्रु बन जावें मीत।
कर मन ? ओं नाम संग परीत।

क्षुधा पिपासा दोऊ नसावें।
संयम से अमृत रस पावें।
रवि ससि लोक दोऊ में जावें।
देव लोक ओ लोक कहावें।
तीन काल का जाने हाल।
ओं नाम जप भये निहाल।
ऋग, यजु, साम, अर्थव, उपदेश
हृद कर तेरे मिटें क्लेश।
ऋषि यहि उपदेश सुनावें।

मंगल मनन करें सुख पावें।

द्विपदी

गुरु चरणन में बैठ कर, नाम दान को पाय।
यथा विधि से जाप कर अघ सब तपुष बुझाय॥

चतुष्पदी

ये नेत्र देखें नहीं वाँ को।
सच्चिदानन्द कहैं हैं जाँ को॥
जिह्वा भी रस नहीं बतावे।
कानों से वह सुना न जावे।
पकड़ सके नहीं उस को हाथ।
छुआ न जाय त्वचा के साथ।
न पहुंचे पग उस के द्वार।
उसकी महिमा अपरम्पार।
नासिका भी कर सकें न ज्ञान।
वाणी से न हो व्याख्यान।
इन्द्रिय गण नहीं उस को पावें।

हार खाय वस चुप रह जावे ।
पांचभूत से बना शरीर ।
वन्हि वारि भुवि व्योम समीर ।
पांच भूत में सब संसार ।
तिस पर इन्द्रियन का अधिकार ।
इस कारण इन्द्रियें नहीं पावें ।
प्रभु पांच से परे कहावे ।
हरि हर घट घट माहि समाने ।
मंगल योग युक्ति से पावें ।

द्विपदी

यम नियमों की साधना , भक्त जनों का धर्म ।
इस के भीतर है छुपा , तत्व ज्ञान का मर्म ॥
शम दम आदि नियम यम तजे भजे भगवान
ऐसे मन्द मति जीव की , भक्ति निष्फल मान

चतुष्पदी

धर्म हीन नर हिंसा वादी ,

तां संग उपजे अनेक उपाधि ॥

धर्म हीन नर मिथ्या चारी ,

तां लग हों अनर्थ अति भारी ॥

धर्म हीन नर चोरी करे ,

पाप कर्म से कबहु न डरे ॥

धर्म हीन नर हो व्यभिचारी ,

नारी पतिव्रत धर्म धन हारी ॥

धर्म हीन नर माया दास ,

त्याग न आवे तांके पास ॥

धर्म हीन नर निर्मल नाहीं ,

मल विक्षेप मल तहि मन माहिं ॥

धर्म हीन के न संतोष ,

स्वार्थ पाप लगा तहि दोष ॥

धर्म हीन नर नातप धारी ,

तिस का जीवन सङ्कट कारी ॥

धर्म हीन स्वाध्याय न करे ॥

इष्ट देव हृदय नहीं धरे ॥

धर्म विसार जपे जो नाम,
तां की भक्ति होये सकाम'
पाप पुण्य का सो फल पावे,
आवा गमन फांस गल लावे ॥
धर्म हीन नर क्यों जग आये'
आ भूमि पर पाप फ़ैलाये ॥
धर्म हीन नर कुल का घाती,
ता संग डूबे सगरि जाति।
धर्म हीन नर दया के योग,
तां के काटें ज्ञानी रोग।
रे नर ? लग सद्‌ जन की शरणा,
भव सागर से जो तुध्र तरणा।
ऋपि यहि उपदेश सुनावें,
मंगल मनन करें सुख पावें।

द्विपदी

धर्मी धर्म न त्यागिये; करे प्राण का त्याग।
तव पापों से मुक्त हों, उपजे प्रभु संग राग ॥

चतुष्पदी

धर्म विहीन जपे जो नाम,
सुफल न होवें तां के काम ।
जिवि किसान हल नहीं चलावे,
बञ्जर भूमि बीज गिरावे ।
पहिले कर नर ! धर्म ज्ञान,
पीछे कर ईश्वर का ध्यान ।
मांग यही ईश्वर से दान,
मोमन लेय धर्म का मान ।
पहली सीढी यही तुम्हारी,
पीछे कर आगे की त्यारी ।
सीढ़ी सीढ़ी ऊपर चढ़ जावें,
जो कूदें तब जान गवावें ।
एक एक अक्षर जो पावे,
एक दिवस पण्डित बन जावे ।
कर्म उपासना तृतीय ज्ञान,
तीनों सीढ़ी इस की जान ।

यह संसार समुद्र अपार,
इस विधि उतरो इस से पार।
वेद यही उपदेश सुनावें,
मंगल मनन करें सुख पावें।

प्रार्थना

द्विपदा

दीनन की सुध लीजिए, हे प्रभु ! दीन दयाल।
कर जोरे दर पै खड़े, तेरे बाल गुपाल॥

चतुष्पदा

हे प्रभु ! तुम हो परमानन्द,
सब को दे रहे आप आनन्द।
हे प्रभु ! तुम हो परोपकारी,
तुझ से जीवित सृष्टि सारी॥
हे प्रभु ! तुम हो सूरज भारे,

तुझ से चमकें ब्रह्मण्ड सारे।
हे प्रभु तुम हो अति बलवान,
तुझ से बल ले सकल जहान।
तुम हो प्रभु अनन्त अपार,
नमस्कार तोहे बारम्बार।
हे प्रभु ? तुम हो दया के नाथ,
तीन लोक पै तेरा हाथ।
हे प्रभु ? तुम हो सब के दाता,
तुमरा दिया हम सब खाता।
हे प्रभु ! तुम हो पितु और माता.
तुझ बिन नहीं किसी संग नाता।
हे प्रभु ? तुम हो अति अनूप,
हर वस्तु में तेरा रूप।
अणु अणु में तू ही समाया,
मंगल देव तव शरणी आया।

द्विपदी

वैदिक जप पूर्ण भयो, सुनो सभी नर नार।
पढ़े सुने जो दृढ़ करे, भव से उतरे पार॥

ओ३म्

आवश्यक सूचना

इस पुस्तक के पढ़ने तथा सुनने का फल कहते है। जो नर नारी इस को पढ़ तथा सुन कर इस के कथनानुसार आचरण करेंगे उनको ये चार फल प्राप्त होंगें।

(१) मन की शुद्धि।
(२) नाम में प्रीति।
(३) ईश्वर विश्वास।
(४) शांति।

निवेदक—

शान्ता नंद

सूचना

यह औषधें विधि पूर्वक उत्तम औषधों से बनने के कारण निहायत फायदे मद साबत हो रही हैं इस लिये लोक हितार्थ प्रकाशित की है

अमृत जीवन

यह प्रेम औषधालय का रत्न है रासायनिक उत्तम औषधों से बनता है वीर्य का पतला होना, अन्य कुटेवों से वीर्य क्षय हो जाना स्वप्न दोष आदि विकारों में अत्यन्त उत्तम है चेहरा कान्ती वान शरीर बलवान हृष्ट पुष्ट बनाता है वीर्य दोष वालों को नव जीवन प्रदान करता है एक२ मात्रा प्रातः सायं दुग्ध से सेवन करे कवज रहती हो तो तीन से ६ मासा तक त्रिफला चूर्ण रात को सोते वकत खावें अमृत जीवन एक पैकट १।।) रु० त्रिफला चूर्ण १ पैकट आध-पाव ॥)

वाल पुष्ट शरवत

बच्चों के कवज दस्त का साफ न होना

आम या हरे पीले दस्तोंका आना उल्टी खांसी बुखार दांत निकलते वक्तकी तकलीफों में राम बाण है कीमत १ शीशी एक पाव १) एक या दो छोटे चमच शरबत में पानी मिला कर दिन में दो बार पिलावें ।

द्राक्षारिष्ट तथा आसव

भूख बढ़ाता है दस्त साफ लाता है खांसी तथा जुकाम दमको दूर करताहै दिलको ताकत देताहै खून बढ़ाताहै पीतेही दिल को खुश करता और थकावट भाग जाती है भोजन के बाद पीना चाहिये मात्रा२ तोला द्राक्षासव १ पा. ।।।)

चन्द्र प्रभावटी

खून की कमी कमजोरी प्रमेह तथा अन्य

धातु रोगको उत्तम औषध है कीमत ॥)तोला प्रातः सायं एक तोला दूध के साथ ।

अशोकारिष्ट

यह औषध स्त्रियों की जीवन दाता है मासिक धर्म (हैज़) ज्यादा आने में जो स्त्रियों को बहुत दुर्बल कर देता है लाभदायक है दोनो समय भोजन के एक घण्टा बाद १ खुराक १। तोला पीनी चाहिये १ शीशी १या ॥।)

सुपारी पाक

स्त्रियों के पुदर रोग के लिये आयुर्वेद का चमत्कार सुपारीपाक है प्रातः सायं दूध के साथ खाना चाहिये गर्भा वस्था में भी दिया जाता है मूल्य १ पैक ३ छ. १)

सौभाग्य शुण्ठी

प्रसव काल की हर एक मरज़ के लिये अति लाभदायक है ६ मासा खुराक अर्क इलायची या दुग्ध के साथ दें ॥ स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इस को बडी महिमा वर्णन की है प्रसव से १॥ वर्ष तक सेवन कर सक्ते हैं इस से दूध भी बढ़ता है कीमत १ पैकट आध पाव १)

नोट—इसके अतिरिक्त सभी शास्त्रीय औषध भस्मे रसादि उचित मूल्य पर मिल सक्ते हैं

पता—

कविराज पं० गुरु प्रसाद:
प्रेम आयुर्वैदिक औषधालय जेहलम

ईश्वरीय बोध

व्यष्टि समष्टि रूप से सारे,
इस जग में जो कुछ है
सब ईश्वर से आच्छादित है,
शून्य नहीं उस से कुच्छ है।
त्यागभाव को आगे रख कर,
तुम इस जग का भोग करो
सब कुच्छ ईश्वर का है ऐसा,
मानो कभी न लोभ करो
दूर समीप वही गति वर्जित,
सब ही को गति देता है।
योगी जनों को बाहर भीतर,
वही दिखाई देता है॥
ईश्वर के आश्रित भूतों को,
सब भूतों में ईश्वर को।
जो देखे फिर कोई संशय,
कभी न होता उस नर को॥
आत्मा ही को जब भूतों में,
अनुभव करने लगता है

एक भाव से तब ज्ञानी का,
मोह शोक सब भगता है ॥
ज्ञानी प्राप्त करे उस को जो शुक्र
शरीर विवर्जित है ।
व्रण नस नाड़ी रहित शुद्ध सब
पापों से वह वर्जित है ॥
मन का साक्षी सर्व व्यापक,
स्वयंसिद्ध सर्वज्ञ वही
प्रजा मात्र के हित कर्ता है,
नित्य नियम से सृष्टि बही
श्रेष्ठ मार्ग पर सदा चलाओ,
उन्नति के हित सब धन,
तेजोमई जो जो कर्म हमारे
तुम ही जानते सब को,
कुटिल पाप से शुद्ध कराओ,
जिस से उसे भगावें
हो कर शुद्ध सदा हम तेरा,
करे ध्यान गुण गावें ॥
हे परमेश्वर सच्चाई का,
मुख सोने से ढका हुआ

उस को देख नहीं सकते हम,
मन सांने में फंसा हुआ।
बन्धन रहित ईश के अन्दर,
जो है पुरुष वही मैं हुं
सर्व व्यापक है ईश्वर तो,
मैं इन प्राणों में स्थित हुं

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः
निवेदकः
गुरुप्रसादः